**महामत कहे सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन।**
**ए सुखकारी अति सुन्दर, ए बका वतन बीच तन।। १२२ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब दूसरा सागर रूहों के स्वरूप की शोभा का है जो अखण्ड परमधाम में अत्यन्त सुन्दर और सुखदायी है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १२२ ।।

## सागर दूसरा रूहों की सोभा

**हक बैठे रूहों मिलाए के, खेल देखावन काज।**
**बड़ी भई रदबदल, रूहें बड़ी रूहसों राज।। १ ।।**

श्री राजजी महाराज सब रूहों को साथ में लेकर खेल दिखाने के वास्ते बैठे हैं। जहां पर श्यामा महारानी और रूहों के साथ बड़ा भारी इश्क का वार्तालाप हुआ।

**देखन खेल जुदागीय का, दिल में लिया रूहन।**
**हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन।। २ ।।**

रूहों ने जुदाई का खेल देखने की दिल में चाहना की। श्री राजजी महाराज तख्त पर रूहों को खेल दिखाने के वास्ते बैठे।

**देहेसत सबों जुदागीय की, पर खेल देखन की चाह।**
**देखें पातसाही हक की, देखें इस्क बड़ा किन का।। ३ ।।**

सब रूहों को जुदाई का डर लग रहा है, पर खेल देखने की चाह अति भारी है, ताकि श्री राजजी महाराज की बादशाही देख सकें और इश्क किसका बड़ा है, जान सकें।

**एह जोत जो जोत में, बैठियां ज्यों सब मिल।**
**क्यों कहूं सोभा इन जुबां, बीच सुन्दर जोत जुगल।। ४ ।।**

सब रूहें इस प्रकार एक साथ मिलकर बैठी हैं। उनके बीच सुन्दर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। इनके स्वरूपों का तेज बेशुमार है। उसकी शोभा यहां की जबान से कैसे कहें?

**सुन्दर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए।**
**यों सबे हिल मिल रहीं, सरूप कहे न जावें दोए।। ५ ।।**

सब सुन्दरसाथ एक रूप होकर भरके बैठे हैं। वह इस तरह से हिल-मिलकर बैठी हैं कि इनके स्वरूप को दो नहीं कह सकते।

**एक सरूप होए बैठियां, माहें वस्तरों कई रंग।**
**क्यों ए बरनन होवहीं, रंग रंग में कई तरंग।। ६ ।।**

सब एक स्वरूप होकर बैठी हैं। जिनके वस्त्रों में कई तरह के रंग हैं और रंग-रंग में कई तरंग हैं। इनका वर्णन कैसे हो?

**देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे नजरों विवेक।**
**बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक।। ७ ।।**

अन्दर की आंखें खोलकर विवेक से देखो तो एक का भी वर्णन करना सम्भव नहीं है। गले से गले लगाकर बैठी हैं।

Nijanand App

**एक सागर कह्यो तेज जोत को, दूजो सोभा सुन्दर।**
**कई तरंग उठें इन रंगों के, खोल देखो आंख अंदर।। ८ ।।**

एक तो नीर सागर का तेज दूसरा रूहों की सुन्दरता के रंगों में कई तरंगें उठती हैं। यह आत्म दृष्टि से देखो।

**ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग।**
**आवे न निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग।। ९ ।।**

यह रूहों का मेला एक-दूसरे से लगकर बैठा है, जिनके बीच में से एक उंगली जाने की जगह नहीं है।

**गिरदवाए तखत के, कई बैठियां तले चरन।**
**जानों जिन होवें जुदियां, पकड़ रहे हम सरन।। १० ।।**

तख्त के चारों तरफ श्री राजजी महाराज के चरणों तले सखियां बैठी हैं और सोच रही हैं कि हम ऐसे ही मिलकर चरणों को पकड़े रखेंगे ताकि अलग न हो सकें।

**चबूतरे लग कठेड़ा, रहियां चारों तरफों भराए।**
**ज्यों मिल बैठियां बीच में, योंही बैठियां गिरदवाए।। ११ ।।**

सखियां चारों तरफ कठेड़े तक भरकर बैठी हैं। जैसे बीच में मिलकर बैठी हैं उसी तरह घेरकर बैठी हैं।

**एक दूजी को अंक भर, लग रहियां अंगों अंग।**
**दिल में खेल देखन का, है सबों अंगों उछरंग।। १२ ।।**

एक सखी दूसरी सखी के गले में हाथ डालकर अंग से अंग लगाकर बैठी है। इनके दिल में खेल देखने की बड़ी उमंग है।

**जाने जिन कोई जुदी पड़े, ए डर दिल में ले।**
**मिल कर बैठियां एक होए, बड़ी अचरज बैठक ए।। १३ ।।**

सब सखियां ऐसे मिलकर बैठी हैं कि देखकर बड़ी हैरानी होती है। उनके दिलों में डर समाया है कि कहीं अलग न हो जाएं।

**अतंत सोभा लेत हैं, कबूं ना बैठियां यों कर।**
**यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर।। १४ ।।**

इस तरह से पूरे चबूतरे पर भरकर कभी नहीं बैठीं। आज इस तरह चबूतरे पर भरकर बैठी हैं कि सागर के समान शोभा बेशुमार है।

**माहें ऊंची नीची कोई नहीं, सब बैठियां बराबर।**
**अंग सकल उमंग में, खेल देखन को चाह कर।। १५ ।।**

सभी सखियां अंग में उमंग लेकर खेल देखने की चाहना से बराबर बैठी हैं। कोई ऊंची नीची नहीं है।

**सोभा सुन्दरता अति बड़ी, हक बड़ी रूह अरवाहें।**
**ए सोभा सागर दूसरा, मुख कह्यो न जाए जुबांए।। १६ ।।**

श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों की बैठक की शोभा और सुन्दरता बेशुमार है। नीर सागर के समान शोभा है, जिसका वर्णन यहां के मुख और जबान से सम्भव नहीं है।

Nijanand App

**अर्स अरवाहों मुख की, जुबां कहा करे बरनन।**
**नैन श्रवन मुख नासिका, सोभा सुन्दर अति घन।। १७ ।।**

परमधाम की रूहों के मुख की शोभा का वर्णन यहां की जबान कैसे करे? रूहों के नेत्र, कान, मुख नासिका बेशुमार शोभा युक्त हैं।

**गौर रंग लालक लिए, सोभा सुन्दरता अपार।**
**जो एक अंग बरनन करूं, वाको भी न आवे पार।। १८ ।।**

सखियों के रंग गोरे हैं और मुखारबिन्द पर लालिमा है। जिससे उनकी शोभा बेशुमार है। इनके एक अंग का भी वर्णन करना सम्भव नहीं है।

**मुख चौक छबि की क्यों कहूं, सोभा हरवटी दंत अधूर।**
**बीच लांक मुसकनी कहां लग, केहे केहे कहूं मुख नूर।। १९ ।।**

उनके मुख की शोभा कैसे कहूं? सुन्दर हरवटी, दांत, होंठ, और हरवटी के बीच की गहराई तथा मुस्कराहट की शोभा कहां तक कहूं?

**साड़ी चोली चरनी, जड़ाव रंग झलकार।**
**कई जवेर केते कहूं, सोभा सागर सुखकार।। २० ।।**

बदन पर साड़ी, चोली, चरनियां के जड़ावों के रंग झलकते हैं। कई जवाहरात सिनगार में शोभा देते हैं। कहां तक उनका वर्णन कहूं?

**रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर।**
**केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिल कर।। २१ ।।**

सब रूहें अलग-अलग वस्त्रों की शोभा में हिल-मिल एक रूप होकर बैठी हैं। उनकी बैठक में साड़ियों के कई रंग हैं। जिनका बयान कैसे करूं?

**कई साड़ी रंग सेत की, कई साड़ी रंग नीली।**
**कई साड़ी रंग लाल हैं, कई साड़ी रंग पीली।। २२ ।।**

कई रूहों की साड़ी सफेद रंग की है। कई की नीली, कई की लाल और कई की साड़ी के रंग पीले हैं।

**एक लाल माहें कई रंग, और कई रंग नीली माहें।**
**कई रंग पीली कई सेत में, कई रंग क्यों कहूं जुबांए।। २३ ।।**

एक लाल रंग में कई रंग हैं। इसी तरह कई रंग नीले, पीले और सफेद रंगों में हैं। जिनके रंगों की शोभा यहां की जबान से कैसे वर्णन करें?

**मैं नाम लेत रंगों के, कहूं केते लाल माहें एक।**
**एक नाम नीला कहूं, माहें नीले रंग अनेक।। २४ ।।**

मैं रंगों के नाम लेती हूं तो एक लाल रंग में ही कई लाल रंग हैं। एक नीला रंग बताती हूं तो उसमें भी कई तरह के नीले रंग हैं।

Nijanand App

**इन बिध कई रंग वस्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए।**
**तिनमें भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए।। २५ ।।**

इस तरह से कई रंग के वस्त्र हैं जिनकी शोभा वर्णन करने में नहीं आती। फिर सब सखियां अंग से अंग लगाकर बैठी हैं। उनमें कोई अलग नहीं है तो उनकी साड़ियों का रंग कैसे बयान करें?

**अनेक रंगों साड़ियां, माहें कई बिरिख बेली पात।**
**फल फूल नकस कटाव कई, ताथें बरन्यो न जात।। २६ ।।**

अनेक रंग की साड़ियों में कई तरह के वृक्ष, बेल, पत्ते, फल, फूल, नक्शकारी, कटाव बने हैं, जिससे उनका वर्णन करना सम्भव नहीं है।

**कई रंग कहूं वस्तरों, के कहूं जवेरों रंग।**
**इन बिध रंग अनेक हैं, ताके उठें कई तरंग।। २७ ।।**

वस्त्रों के कई रंग कहे हैं। जवेरों के कई रंग कहे हैं। इस तरह के कई रंग हैं जिनमें कई तरह की तरंगें उठती हैं।

**कई किरने उठें कंचन की, कई किरने हीरन।**
**पाच पांने मोती मानिक, किरने जाए न कही जवेरन।। २८ ।।**

कई तरंगें सोने की, कई हीरों की, कई पाच की, कई पन्ना की, कई मोती और माणिक की, जवेरों की किरणें उठती हैं। यह कहा नहीं जा सकता।

**सो किरने लगे जाए ऊपर, और द्वार दिवालों थंभन।**
**आवें उतथें किरने सामियां, माहों माहें जंग करें रोसन।। २९ ।।**

यह किरणें ऊपर दरवाजे, दीवारों, थंभों में आमने-सामने टकराती हैं।

**और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए।**
**बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए।। ३० ।।**

चोली और चरनियां (लहंगा) सबके अंग की ही शोभा दिखाई देती है। रूहों के एक अंग का वर्णन करना सम्भव नहीं है। यह तो सब लिपटकर बैठी हैं।

**हेम हीरा मोती मानिक, कई रंगों के हार।**
**पाच पांने नीलवी लसनिए, कई जवेरों अंबार।। ३१ ।।**

सोना, हीरा, मोती, माणिक तथा और कई रंगों के हार पहने हैं जिनमें पाच, पन्ना, नीलवी और लसनियां के जड़े नग बेशुमार शोभा देते हैं।

**सोभा अतंत है भूखनों, स्वर बाजत हाथ चरन।**
**मीठी बानी अति नरमाई, खुसबोए और रोसन।। ३२ ।।**

आभूषणों की शोभा भी बेशुमार है जो हाथ और पैर चलाने से आवाज करते हैं। उनकी सुन्दर नर्म और मीठी वाणी और खुशबू बेहद सुखदाई हैं।

Nijanand App

**वस्तर भूखन सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग।**
**एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कई तरंग।। ३३ ।।**

सब अंगों के वस्त्र आभूषणों के कितने ही रंग हैं। कैसे कहूं? एक-एक नग में अनेक रंग हैं और एक-एक रंग में कई तरंगें हैं।

**निलवट श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कई हार।**
**हाथ पांउं चरन भूखन, अति अलेखे सिनगार।। ३४ ।।**

रूहों का मस्तक, कान, नाक, सिर, तन तथा गले के हार, हाथ, पांव, चरण के आभूषण के कई बेशुमार सिनगार हैं।

**जो होवें अरवा अर्स की, सो लीजो कर सहूर।**
**अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर।। ३५ ।।**

जो परमधाम की रूहें हों वह विचार कर देखना। यहां अंगों के रंग तथा नग के रंग सब आपस में जंग करते हैं। ऐसी सुन्दर शोभा बनी है।

**महामत कहे बैठियां देख के, हक हंसत हैं हम पर।**
**कहें देखो इन बिध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर।। ३६ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से रूहों को इकट्ठा बैठा देखकर श्री राजजी महाराज हंस रहे हैं और कहते हैं कि देखें खेल में जाकर कैसे इकट्ठी रहती हैं?

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १५८ ।।

## ढाल दूसरा इसी सागर

**लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अर्स।**
**याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस।। १ ।।**

इस सुख के सागर की शोभा परमधाम की रूहें लेंगी, क्योंकि इनकी ही परआतम मूल-मिलावे में बैठी हैं। जिसे यह परस्पर देखेंगी।

**ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन।**
**वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन।। २ ।।**

यह जो सपने के स्वरूप हैं इनकी परआतम की नजर इनको ही देख रही है। वह परआतम हमारे सपने के तनों को सपने में देख रहे हैं।

**उनों अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर।**
**अंदर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर।। ३ ।।**

जब हमारी आत्मा परआतम को परमधाम की नजर से देखे तो खेल में बैठे ही अखण्ड घर के सुख हृदय में चुभ जाते हैं।

**सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम।**
**ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक हुकम।। ४ ।।**

हमारी परआतम की नजर हमारे संसार के तनों पर है। जहां हम अलग-अलग हो गए हैं। इस संसार में हम जो कुछ करते हैं वह सब श्री राजजी का हुकम कराता है।

Nijanand App